

आशीष

अंचल पसारि मागूँ वार वार विधिना ते,
बाबल कृपाल तुम नितहि सुखी रहो ।
लक्ष्मी को नाथ रहे सदा संग साथ तोसों,
गाय गुण गाथ सुख साज में सने रहो ॥
सुषमा निधान शील सरल सुजान प्रभु,
महिमा अपार प्रेम रस में भिने रहो ।
बड़े हो उदार नित देत दान दीनन को,
बृज के निवासी मोद मंगल भरे रहो ॥१॥
गरीब निवाज़ बाबा लाज के जहाज बाबा,
सन्त सिरताज बाबा शील के भण्डार हो ।
दीन के दयाल बिन कारण कृपाल बाबा,
दशरथ लाल के प्रेम अवितार हो ॥
नीति के निधान प्रीति रीति प्रदान करो,
कलि जीव तारिवे को आए संसार हो ।
देत हूँ आशीष नित राखो जगदीश तेरो,
कोटनि वरीष बृजभूमि सुख सार हो ॥२॥
नैननि के तारे प्राण प्यारे प्राण नाथ साईं,

दास रखिवारे तुम दीन हितकारी हो ।
सनातन धर्म की जुग जुग रक्षा कीनी,
सब देवनि मनाइ रघुवीर भक्ति धारी हो ॥
जो जो शरण आयो नाम रस दान पायो,
पापनि पुनीत दोऊ लोक हितकारी हो ।
जांके पीठ हाथ धरयो तांते यमराज डरयो,
कृपा के निकेत साईं वन्दना हमारी हो ॥३॥
सांवरो सलोनी सुकुमार प्राण आधार कीन्हो,
स्वामिनीसुहाग तेरे शीश सिरताज हैं ।
लव कुश लाल लेके गोद महा मोद भरे,
नैननि के आगे नितु अवध समाज है ॥
शील निधि रूप निधि नेही रघुन्दन के,
गाहक गरीबनि के पूरे सब काज हैं ।
शारदा ओ शेष ओ गणेश ओ महेश विधि,
सब रखवारे तेरे मेरे महाराजहैं ॥४॥
प्रीति औ प्रतीति रसरीति सब जानत हो
रघुवीर रूप नैनकंज अनुरागे हैं ।
सत्संग कीन्हों ताने हरिरस चीन्हों
जाको नामदान दीन्हों ताके भ्रम भय भागे हैं ॥

पावन प्रताप जग व्यापि रह्यो चहूँ ठौर

एक बार दरश कियो ताके भाग जागे हैं ।

जुगां जुग जाओ साईं खीर खण्डु पीओ साईं,

अजर अमर रहो प्रेम रस पागे हैं ॥५॥

सन्तनि के सिरताज हो दासन के प्रतिपाल ।

प्रेम भक्ति भण्डार हो बाबल दीन दयाल ॥

बाबल दीन दयाल हो सदां सेवक हितकारी ।

बृज मण्डल विहरो सदां भक्तन भयहारी ॥

प्रीतम प्रेम तरंग में रैन दिवस राते रहो ।

रमा नाथ बृज नाथ की कृपा कोर नितहीं लहो ॥६॥

शील सनेह सुजान प्रभु गुणनिधि परम उदार ।

श्रीराम कथा के तत्व को सब विधि जाननहार ॥

सब विधि जाननहार तदपि हिरदय महुँ गोई ।

अखिल भुवन के नाथ तुमहिं पै जान न कोई ॥

हरिहर गुरुप्रसाद ते होय अचल तुव राज ।

मंगल मोद लहो सन्तनि के सिरताज ॥७॥

सीयाराम की जै राधेश्याम की जै

बोलो साईं साहिब सुखधाम की जै